९. मराठों का स्वतंत्रता युद्ध

छत्रपति शिवाजी महाराज की मृत्यु के पश्चात स्वराज्य की रक्षा करने के लिए मराठों ने छत्रपति संभाजी महाराज, छत्रपति राजाराम महाराज और महारानी ताराबाई के नेतृत्व में मुगलों से प्रखर संघर्ष किया । यह संघर्ष सत्ताईस वर्ष चला । प्रदीर्घ चले इस संघर्ष को 'मराठों का स्वतंत्रता युद्ध' कहते हैं । ई.स.१६८२ में स्वयं औरंगजेब बादशाह दक्षिण में चलकर आया । फिर भी मुगलों के साथ हुए इस युद्ध में अनेक विकट बाधाओं को मात देते हुए मराठे विजयी हुए । भारतीय इतिहास में यह स्वतंत्रता युद्ध रोमहर्षक और तेजस्वी युग रहा है । इस पाठ में हम उस स्वतंत्रता युद्ध का अध्ययन करेंगे ।

यहाँ 'मराठा' शब्द 'मराठी भाषा बोलने वाला' अथवा 'महाराष्ट्र के लोग' अर्थ में है ।

करके देखो

'मैं संभाजीराजे बोल रहा हूँ... अभिनय करो ।

छत्रपति संभाजी महाराज

छत्रपति संभाजी महाराज : छत्रपति संभाजी महाराज शिवाजी महाराज के बड़े बेटे थे । उनका जन्म १४ मई १६५७ को पुरंदर किले में हुआ । शिवाजी महाराज के पश्चात वे छत्रपति बने । उस समय मराठों का मुगलों के साथ संघर्ष जारी था । ऐसी स्थिति में औरंगजेब बादशाह का बेटा शाहजादा अकबर ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया । औरंगजेब ने इस विद्रोह को कुचल दिया । तत्पश्चात अकबर दक्षिण में संभाजी महाराज के आश्रय में चला आया । अकबर का दमन करने हेतु ई.स.१६८२ में स्वयं औरंगजेब दक्षिण में आया । वह अपने साथ विशाल सेना और शक्तिशाली तोपखाना ले आया । उसने जंजीरा के सिद्दी को मराठों के विरोध में अभियान चलाने को कहा । उसने पुर्तगालियों को भी अपने पक्ष में कर लिया । परिणामत: संभाजी महाराज को एक ही समय में कई शत्रुओं का सामना करना पड़ा ।

संभाजी महाराज का कार्यकाल शिवाजी महाराज के पश्चात हुए मराठों के स्वतंत्रता युद्ध का प्रथम अध्याय है । शिवाजी महाराज ने अपने कार्यकाल में ही उन्हें राज्य प्रशासन और सैनिकी अभियानों की उत्तम शिक्षा प्रदान की थी । १४ वर्ष की आयु से ही उन्होंने राज्य प्रशासन और सैनिकी प्रभुत्व की ओर ध्यान देना प्रारंभ किया था । अपनी युवावस्था में उन्होंने मुगलों और आदिलशाही के कई प्रदेशों पर आक्रमण किए । उनके युद्ध कौशल का वर्णन करते हुए तत्कालीन फ्रांसीसी प्रवासी एबे कैरे कहता है, ''यह युवराज छोटा है । फिर भी धैर्यशील और अपने पिता की कीर्ति के अनुरूप ही शूर-वीर है.... ।''

संभाजी महाराज के छत्रपति बनने के पश्चात मराठों का मुगलों के साथ चलने वाला संघर्ष अधिक प्रखर हुआ । औरंगजेब का उद्देश्य काबुल से कन्याकुमारी तक मुगलों का एकछत्र शासन निर्माण करना था । अपनी विशाल सैनिकी और आर्थिक शक्ति द्वारा मराठों का राज्य पूर्णत: नष्ट करना उसका स्वप्न था लेकिन संभाजी महाराज ने अपनी वीरता और युद्ध कौशल के बल पर उसका यह स्वप्न धूल में मिला दिया । उनकी सैनिकी टुकड़ियाँ

मुगलों के प्रदेशों पर आक्रमण करतीं । नाशिक के समीप रामसेज का किला था । इस किले को औरंगजेब के सेनानी दीर्घकाल तक प्रयास करने के बावजूद जीत नहीं पाए। इस प्रकार संभाजी महाराज ने अपने शौर्य से औरंगजेब को त्रस्त कर दिया । एक बार तो औरंगजेब ने क्रोध में आकर अपने सिर का मुकुट जमीन पर पटका और प्रतिज्ञा की, ''जब तक इस संभाजी को हरा नहीं दूँगा, तब तक मैं मुकुट नहीं पहनूँगा ।'' संभाजी महाराज ने औरंगजेब को इतना विवश कर दिया था ।

क्या तुम जानते हो ?

प्रारंभ में यह सोचकर कि मराठों के किले जीतने से उनका राज्य समाप्त हो जाएगा; औरंगजेब ने नाशिक के समीप रामसेज किले पर घेरा डाल दिया । औरंगजेब के सैनिक असंख्य थे और मराठों के सैनिक नगण्य थे परंतु उन्होंने कड़ा प्रतिकार किया । यह घेरा आगे चलकर पाँच वर्ष तक जारी रहा । मुट्ठी भर मराठा सैनिकों द्वारा दिखाई गई यह वीरता अद्वितीय थी । मराठों द्वारा किए गए इस कड़े प्रतिकार के कारण औरंगजेब को बोध हो गया कि मराठों के साथ संघर्ष करना बहुत कठिन है ।

सिद्दी के विरुद्ध अभियान : जंजीरा का सिद्दी मराठी प्रदेश में उत्पात मचाता था । मराठों के प्रदेशों पर धावा बोलकर वह आगजनी, लूटपाट और अत्याचार करता था । बखरकार (इतिहासकार) सभासद ने उसका वर्णन इन शब्दों में किया है, 'घर में जैसे चूहे, वैसे राज्य में सिद्दी ।' संभाजी महाराज ने ई. स. १६८२ में उसके विरुद्ध अभियान चलाया। मराठों ने सिद्दी के अधिकारवाले दंडाराजपुरी किले को घेर लिया और जंजीरा पर भी जबर्दस्त तोपें दागीं परंतु ठीक उसी समय मुगलों ने स्वराज्य पर आक्रमण किया । फलस्वरूप संभाजी महाराज को जंजीरा अभियान अधूरा छोड़कर लौट आना पड़ा ।

पुर्तगालियों के विरुद्ध अभियान : गोआ के पुर्तगाली संभाजी महाराज के विरुद्ध औरंगजेब से मिल गए थे । अत: संभाजी महाराज ने पुर्तगालियों को सबक सिखाने का निश्चय किया। उन्होंने ई.स.१६८३ में पुर्तगालियों के रेवदंडा बंदरगाह पर धावा बोला । इसके प्रत्युत्तर में पुर्तगालियों ने गोआ की सीमा पर स्थित मराठों के फोंडा किले को घेर लिया। मराठों ने घेरा तोड़ा और गोआ पर आक्रमण किया । इस युद्ध में येसाजी ने शौर्य की पराकाष्ठा की। इसमें पुर्तगाली गवर्नर हताहत हुआ । उसे पीछे हटना पड़ा। संभाजी महाराज ने उसका पीछा किया । पुर्तगाली बड़े संकट में घिर गए । उसी समय संभाजी महाराज को मुगलों द्वारा दक्षिण कोकण पर आक्रमण किए जाने का समाचार प्राप्त हुआ । फलस्वरूप हाथ आई गोआ की सफलता को छोड़कर उन्हें मुगलों का प्रतिकार करने के लिए लौट आना पड़ा ।

आदिलशाही और कुतुबशाही का अंत : मराठों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान में औरंगजेब को सफलता प्राप्त नहीं हो रही थी । अत: उसने मराठों के विरुद्ध उस अभियान को स्थगित किया। अब उसने आदिलशाही और कुतुबशाही राज्यों के विरुद्ध मोर्चा खोला । औरंगजेब ने ये राज्य जीत लिए ।

इन दोनों राज्यों की संपत्ति और सैनिकी सामग्री मुगलों के हाथ लगी । परिणामत: औरंगजेब की स्थिति दृढ़ हो गई । इसके पश्चात औरंगजेब ने मराठों को पराजित करने के लिए अपनी सारी शक्ति केंद्रित की । उसने मराठी प्रदेश पर चारों ओर से हमले किए । मुगल सेना का प्रतिकार करते समय मराठा सेनापति हंबीरराव मोहिते वीरगति को प्राप्त हुआ । फलस्वरूप संभाजी महाराज का सेना पक्ष दुर्बल हो गया ।

संभाजी महाराज का राज्य प्रशासन : यद्यपि संभाजी महाराज युद्ध की दौड़-धूप में निरंतर व्यस्त रहे; फिर भी अपने राज्य प्रशासन के प्रति लापरवाह नहीं रहे । उन्होंने शिवाजी महाराज के कार्यकाल में प्रचलित निरपेक्ष न्यायप्रथा और राजस्व व्यवस्था को उसी रूप में आगे भी जारी रखा । स्वराज्य के

विरुद्ध विद्रोह करने वाले तथा सामान्य प्रजा को कष्ट पहुँचाने वाले वतनदारों अथवा जागीदारों को कठोर दंड दिया । महारानी येसूबाई को राज्य प्रशासन के अधिकार दिए । उनकी अपनी मुद्रा बनवाकर दी। शिवाजी महाराज की प्रजाहित की नीति को उन्होंने अपने कार्यकाल में आगे जारी रखा।

संभाजी महाराज को संस्कृत भाषा के साथ कई भाषाएँ अवगत थीं । उन्होंने ग्रंथ भी लिखे । राजनीति पर लिखे गए प्राचीन भारतीय ग्रंथों का अध्ययन किया और उन ग्रंथों का सार उन्होंने 'बुधभूषण' ग्रंथ में प्रस्तुत किया ।

क्या तुम जानते हो ?

संभाजी महाराज ने संस्कृत भाषा में 'बुधभूषणम्' ग्रंथ की रचना की । इस ग्रंथ के दूसरे अध्याय में राजनीति का उल्लेख हुआ है। इसमें शासक के लक्षण, प्रधान, राजपुत्र, उनकी शिक्षा-दीक्षा और कार्य, शासक के सलाहकार, गढ़, गढ़ पर लगने वाली सामग्री, सेना, शासक के कर्तव्य, गुप्तचर व्यवस्था आदि के विषय में जानकारी दी गई है ।

संभाजी महाराज की मृत्यु : औरंगजेब संभाजी महाराज को मात देने के प्रयत्नों की पराकाष्ठा कर रहा था । उसने मुकर्रब खान को कोल्हापुर प्रांत में नियुक्त किया था । मुकर्रब खान को समाचार मिला कि संभाजी महाराज कोकण में संगमेश्वर नामक स्थान पर हैं। उसने छापा मारकर संभाजी महाराज को बंदी बनाया। उन्हें औरंगजेब के सामने लाया गया । संभाजी महाराज ने उसके सामने अपना आत्मसम्मान नहीं त्यागा। इसके बाद बादशाह के आदेश पर ११ मार्च १६८९ को उनकी अति क्रूरतापूर्वक हत्या की गई । मराठों के छत्रपति संभाजी महाराज ने अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए वीरतापूर्वक मृत्यु का सामना किया । उनके बलिदान से प्रेरणा लेकर अब मराठों ने मुगलों के विरुद्ध अपना संघर्ष अधिक प्रखर किया ।

छत्रपति राजाराम महाराज

छत्रपति राजाराम महाराज : राजाराम महाराज शिवाजी महाराज के द्वितीय बेटे थे । उनका जन्म २४ फरवरी १६७० को रायगढ़ में हुआ। संभाजी महाराज की मृत्यु के पश्चात वे छत्रपति बने। औरंगजेब को लगा कि मराठों का राज्य जीतने का उसका स्वप्न अब पूरा होगा । परिणामत: उसने रायगढ़ को घेरने के लिए जुल्फिकार खान को भेजा । उस समय राजाराम महाराज और उनकी पत्नी महारानी ताराबाई, संभाजी महाराज की पत्नी येसूबाई और उनका बेटा शाहू रायगढ़ में ही थे । इन सभी का एक ही स्थान पर रहना असुरक्षित था । इस स्थिति में येसूबाई ने इस विकट संकट का सामना बड़े धैर्य के साथ किया। किसी भी हालत में मुगलों के सामने घुटने नहीं टेकने हैं, यह निश्चय कर उन्होंने रायगढ़ पर महत्त्वपूर्ण राजनीतिक निर्णय लिए । इसके अनुसार यह नीति तय की गई कि राजाराम महाराज रायगढ़ के घेरे से बाहर निकलें और आवश्यकता पड़ने पर जिंजी जाएँ तथा महारानी येसूबाई अपने नेतृत्व में रायगढ़ पर युद्ध करें । येसूबाई ने छत्रपति पद पर अपने बेटे को न बिठाकर राजाराम महाराज को छत्रपति पद देने का निर्णय किया । यह निर्णय स्वराज्य के प्रति उनका प्रेम और स्वार्थत्याग की पराकाष्ठा का उदाहरण है । उन्होंने अपने और अपने पुत्र के प्राणों की परवाह न करते हुए मराठों के छत्रपति को सुरक्षित रखा ।

चलो, ढूँढ़ें

भारत के मानचित्र में 'जिंजी' स्थान ढूँढ़ो ।

राजाराम महाराज का जिंजी प्रस्थान : ५ अप्रैल १६८९ को राजाराम महाराज अपने कुछ सहयोगियों

के साथ रायगढ़ के घेरे से निकल गए । उन्होंने दक्षिण में जिंजी जाने का निर्णय किया । जिंजी का किला अभेद्य था । इस किले को जीतना मुगलों के लिए सरल नहीं था। प्रह्लाद निराजी, खंडो बल्लाल, रूपाजी भोसले आदि विश्वसनीय सहयोगियों को अपने साथ लेकर राजाराम महाराज जिंजी पहुँचे ।

मराठों की गतिविधियाँ : मुगलों की सामर्थ्य के आगे रायगढ़ का युद्ध लंबे समय तक जारी रखना कठिन था । मुगलों ने नवंबर १६८९ में रायगढ़ अपने अधिकार में कर लिया और महारानी येसूबाई तथा शाहू को बंदी बनाया । जिंजी को प्रस्थान करते समय राजाराम महाराज ने मुगलों के विरुद्ध संघर्ष जारी रखने का दायित्व रामचंद्रपंत अमात्य, शंकराजी नारायण सचिव, संताजी घोरपड़े और धनाजी जाधव को सौंपा था ।

मराठों की दृष्टि से यह निर्णायक स्थिति थी । औरंगजेब ने कई मराठी सरदारों को वतनदारी और जागीरें देकर अपने पक्ष में कर लिया था । राजाराम महाराज ने भी औरंगजेब के प्रत्युत्तर में यही नीति अपनाई । उनके द्वारा आश्वासन दिया गया कि जो मराठी सरदार मुगल प्रदेश जीतेगा; उस सरदार को वह प्रदेश जागीर के रूप में दिया जाएगा । छत्रपति द्वारा दिए गए आश्वासन के कारण अनेक वीर-पराक्रमी सरदार आगे बढ़े । उन्होंने मुगल प्रदेश पर धड़ल्ले के साथ आक्रमण प्रारंभ किए । कई मुगल सेनानियों को पराजित किया । इस पराक्रम में संताजी और धनाजी सबसे आगे थे । उनके अप्रत्याशित हमले और गुरिल्ला युद्ध नीति के आगे मुगलों को अपनी विपुल साधन सामग्री और भारी-भरकम तोपखाने का उपयोग करना कठिन हो गया । पर्याप्त किले, प्रदेश और धन न होने पर भी मराठों ने मुगलों को ऐसा तंग किया कि उन्हें भागने के लिए राह भी न मिली । एक बार तो संताजी घोरपड़े और विठोजी चव्हाण ने औरंगजेब की छावनी पर अचानक आक्रमण किया और उसके खेमे के ऊपर लगा सोने का कलश काटकर ले गए ।

जिंजी का घेरा : रायगढ़ को अपने अधिकार में

क्या तुम जानते हो ?

मुगल सैनिक धनाजी से इतने भयभीत रहते थे कि यदि पानी पीते समय घोड़ा बिदक जाए तो वे घोड़े से पूछते थे, ''क्यों रे ? क्या तुझे पानी में धनाजी दिखाई देता है ?''

कर लेने के बाद औरंगजेब ने जुल्फिकार खान को दक्षिण में जिंजी के अभियान पर भेजा । उसने जिंजी को घेर लिया । लगभग आठ साल तक मराठे पराकाष्ठा के साथ जिंजी किले का युद्ध करते रहे । संताजी और धनाजी ने घेरा डाले हुए मुगल सैनिकों पर बाहर से प्रखर हमले किए । अंततः राजाराम महाराज घेरे से निकलकर महाराष्ट्र में लौट आए । इसके पश्चात जुल्फिकार खान ने जिंजी किला जीता ।

राजाराम महाराज के महाराष्ट्र में लौट आने से मराठों में वीरता का संचार हुआ । उन्होंने मुगलों के अधिकारवाले खान्देश, वऱ्हाड़ (बरार), बागलाण प्रदेशों पर हमले किए । राजाराम महाराज ने अपनी सूझ-बूझ और कूटनीति से संताजी और धनाजी जैसे सैकड़ों वीर मराठा तैयार किए । उनमें स्वराज्य रक्षण की प्रेरणा निर्माण करने का उल्लेखनीय कार्य किया परंतु यह सब कुछ चल रहा था; तभी २ मार्च १७०० को राजाराम महाराज का सामान्य-सी बीमारी के कारण सिंहगढ़ पर निधन हो गया ।

राजाराम महाराज स्वभाव से विचारशील और मिलनसार थे । मराठी राज्य के सभी पराक्रमी वीरों को उन्होंने एकसूत्र में बाँधा । उनमें एकता निर्माण की और चेतना फूँकी । संभाजी महाराज की मृत्यु के बाद ११ साल तक उन्होंने औरंगजेब के साथ धैर्यपूर्वक और जीवटता से प्रखर संघर्ष किया । बड़े विकट समय में राजाराम महाराज ने स्वराज्य की रक्षा की । राजाराम महाराज का यह सबसे बड़ा उल्लेखनीय कार्य है।

रियासत (रियासतकार) गो. स. सरदेसाई ने छत्रपति राजाराम का वर्णन करते हुए उनके लिए 'स्थिरबुद्धि' विशेषण का उपयोग किया है । उनके

द्वारा प्रयुक्त यह विशेषण पूर्णतः सटीक और यथार्थ लगता है ।

करके देखो

- अपने परिसर की उन महिलाओं का साक्षात्कार लो; जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किया है ।

महारानी ताराबाई : छत्रपति राजाराम महाराज की मृत्यु के पश्चात औरंगजेब को लगा कि अब हमने विजय पा ली परंतु स्थिति बड़ी विपरीत थी । औरंगजेब एक के बाद दूसरी लड़ाई जीतता जा रहा था परंतु वह समग्र युद्ध जीत नहीं पा रहा था । अत्यंत विपरीत परिस्थिति में स्वराज्य की बागडोर हाथ में लेने के लिए राजाराम महाराज की वीरांगना पत्नी महारानी ताराबाई आगे बढ़ीं ।

महारानी ताराबाई

मुगल इतिहासकार खाफी खान ने महारानी ताराबाई का गौरव इन शब्दों में किया है, ''वह (ताराबाई) बुद्धिमान और चतुर थीं । सैनिकी प्रबंधन और राज्य प्रशासन के विषय में पति के रहते उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी ।''

छत्रपति राजाराम महाराज की मृत्यु के पश्चात महारानी ताराबाई ने अपने सरदारों की सहायता से अति प्रतिकूल स्थिति में स्वतंत्रता युद्ध को पूरे प्रयास से जारी रखा । औरंगजेब ने मराठों के प्रदेश सातारा, पन्हाला जीत लिए तो मराठे मुगलों के मध्य प्रदेश, गुजरात तक बढ़ गए । ताराबाई ने युद्ध क्षेत्र को फैला दिया। कृष्णाजी सावंत, खंडेराव दाभाड़े, धनाजी जाधव, नेमाजी शिंदे जैसे सरदार महाराष्ट्र के बाहर मुगलों के साथ संघर्ष करने लगे । यह युद्ध का पलड़ा बदलते जाने का संकेत था ।

महारानी ताराबाई ने सात वर्ष संघर्ष किया और राज्य की रक्षा की । संपूर्ण प्रशासन को अपने नियंत्रण में लेकर सभी सरदारों को स्वराज्य के कार्य से जोड़ दिया । मराठे सरदार सिरोंज, मंदसौर, मालवा तक पहुँचकर मुगलों के साथ लड़ने लगे । खाफी खान ने लिखा है, ''राजाराम की पत्नी ताराबाई ने विलक्षण घमासान मचाया । इसमें उसके

क्या तुम जानते हो ?

महारानी ताराबाई ने गुरिल्ला (छापामार) युद्ध नीति का बहुत भली-भाँति उपयोग किया । औरंगजेब की सेना के सम्मुख मराठों की शक्ति अत्यंत कम थी। किला जीतने के लिए औरंगजेब किले को घेर लेता । जहाँ तक संभव है; उतने समय तक मराठा किले का युद्ध लड़ते । वर्षाकाल समीप आते ही ऐसा जताया जाता मानो मराठा किलेदार भेदी बन गया है । इसके बाद औरंगजेब से प्रलोभन की राशि लेकर किला उसे सौंपा जाता । किलेदार प्रलोभन राशि को मराठी कोष में जमा कर देता । औरंगजेब किले में अनाज, धन, गोला-बारूद आदि का जैसे ही संग्रह कर रखता वैसे ही ताराबाई उस किले को जीत लेतीं । ताराबाई की इस युद्ध तकनीक का वर्णन 'सेफ डिपॉजिट लॉकर सिस्टम' इस रूप में किया जाता है ।

सैनिकी नेतृत्व और युद्ध अभियानों के प्रबंध के गुण प्रखरता से प्रकट हुए। परिणामतः मराठों के आक्रमण और युद्ध की गतिमानता दिन-प्रति-दिन बढ़ती गई ।'

क्या तुम जानते हो ?

ताराबाई के पराक्रम का वर्णन करते हुए 'शिवभारतकार' परमानंद का लड़का कवि देवदत्त कहते हैं,

ताराबाई रामराणी । भद्रकाली कोपली ।
दिल्ली झाली दीनवाणी । दिल्लीशाचे गेले पाणी ।
रामराणी भद्रकाली । रणरंगी क्रुद्ध झाली ।
प्रयत्नाची वेळ आली । मुगल हो सांभाळा ।।

इस प्रकार छत्रपति शिवाजी महाराज के पराक्रम और वीरता की विरासत का निर्वाह महारानी ताराबाई ने किया ।

मराठों के आक्रामक आक्रमणों से औरंगजेब हताश हो गया । मुगल-मराठों का यह संघर्ष लगातार पच्चीस वर्ष चल रहा था । मराठों को पराजित करना मुगलों के लिए संभव न हुआ । ऐसी स्थिति में ई.स.१७०७ में औरंगजेब की अहमदनगर में मृत्यु हुई । उसकी मृत्यु के साथ ही मराठों का स्वतंत्रता युद्ध समाप्त हो गया ।

मराठों का यह स्वतंत्रता युद्ध मुगल सत्ताधीशों की साम्राज्य लालसा और मराठों के मन में स्थित स्वतंत्रता की आकांक्षा के बीच का युद्ध था । इसमें मराठों की विजय हुई । यही नहीं बल्कि औरंगजेब की मृत्यु के कारण जो राजनीतिक रिक्तता कालांतर में उत्पन्न हो गई थी; उसको भरने में मराठा अग्रसर रहे । उन्होंने दिल्ली के सिंहासन पर अंकुश रखते हुए लगभग संपूर्ण भारत का शासन चलाया और उसकी रक्षा भी की । परिणामतः अठारहवीं शताब्दी को मराठों की शताब्दी कहा जाता है । इस शताब्दी के मराठों के कार्यों और पराक्रम का इतिहास हम अगले पाठ में देखेंगे ।

भोसले घराने की वंशावली

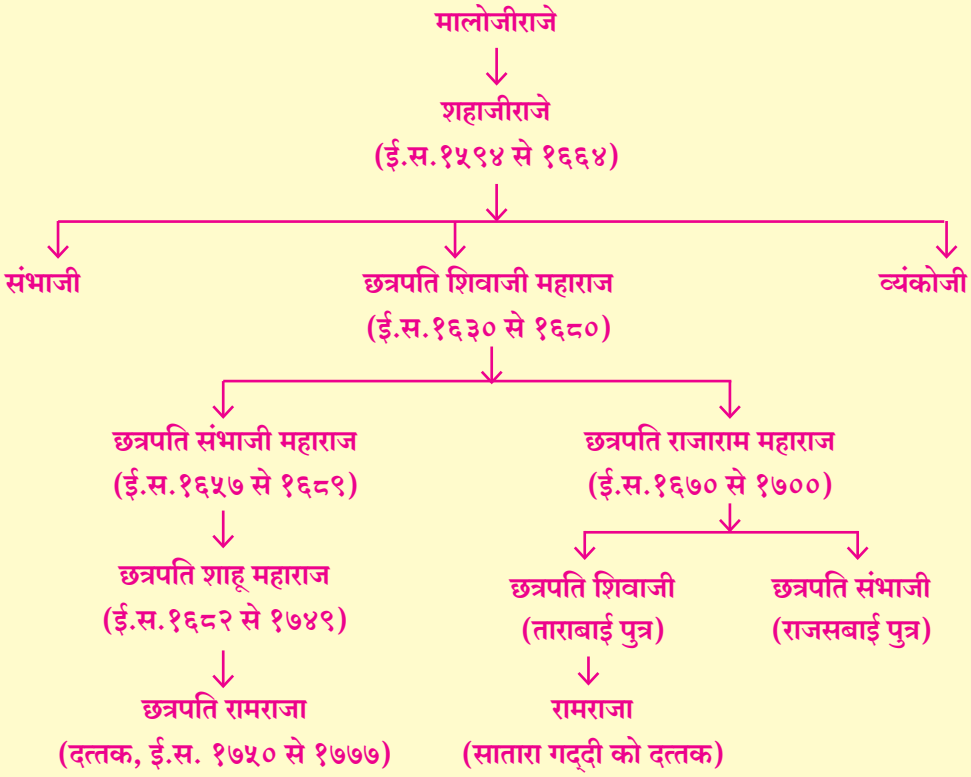

स्वाध्याय

१. उचित विकल्प चुनो :

(१) औरंगजेब इसके पराक्रम से त्रस्त हो गया था –
(अ) शाहजादा अकबर (ब) छत्रपति संभाजी महाराज (क) छत्रपति राजाराम महाराज

(२) औरंगजेब के खेमे के ऊपर लगा सोने का कलश काटकर ले जाने वाले –
(अ) संताजी और धनाजी (ब) संताजी घोरपडे और विठोजी चव्हाण (क) खंडो बल्लाल और रूपाजी भोसले

(३) गोआ के युद्ध में पराक्रम की पराकाष्ठा करनेवाला –
(अ) येसाजी कंक (ब) नेमाजी शिंदे
(क) प्रह्लाद निलाजी

२. पाठ में ढूँढ़कर लिखो :

(१) संभाजी महाराज को जंजीरा का अभियान अधूरा छोड़कर क्यों लौट आना पड़ा ?

(२) संभाजी महाराज ने पुर्तगालियों को सबक सिखाने का निश्चय क्यों किया ?

(३) जिंजी जाते समय राजाराम महाराज ने स्वराज्य की रक्षा का दायित्व किसपर सौंपा ?

(४) कवि देवदत्त ने महारानी ताराबाई के पराक्रम का वर्णन किन शब्दों में किया है ?

३. क्यों ? वह लिखो :

(१) औरंगजेब ने आदिलशाही और कुतुबशाही की ओर अपना मोर्चा खोला।

(२) संभाजी महाराज के पश्चात मराठे मुगलों के साथ आर-पार का युद्ध करने के लिए तैयार हो गए ।

(३) यह नीति तय की गई कि महारानी येसूबाई के नेतृत्व में रायगढ़ का युद्ध किया जाए ।

उपक्रम

भारत के मानचित्र में गोआ, बीजापुर, गोलकुंडा, जिंजी, अहमदाबाद और अहमदनगर स्थानों को दर्शाओ ।

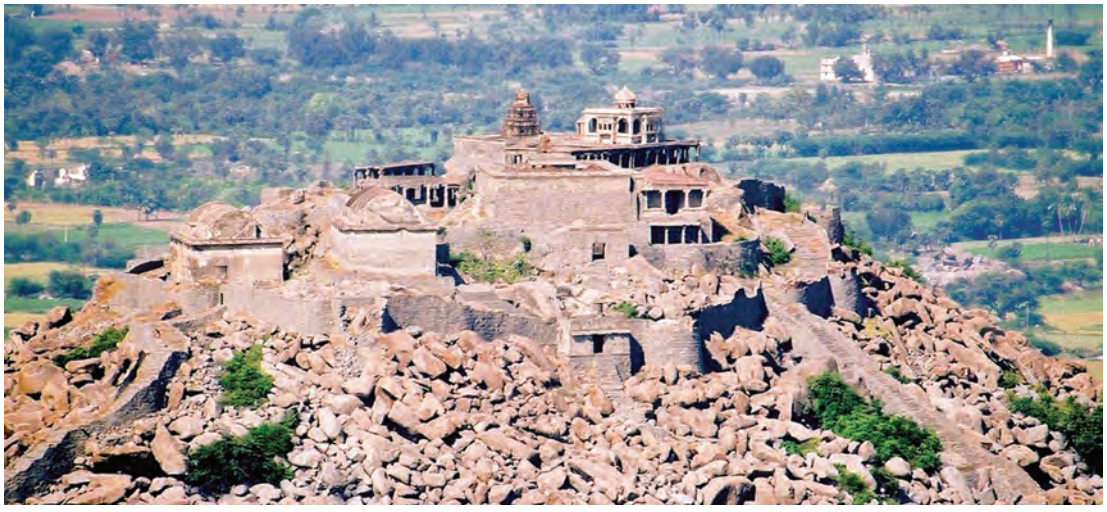

जिंजी का किला